* उपसंहार *

उपसंहार

डा.धर्मवीर भारती ने आधुनिक हिंदी साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। भारती का बचपन दुख से भरा हुआ था। बचपन में स्कूली शिक्षा लेते समय पिताजी की अचानक मृत्यु हो गयी। जिसकी वजह से उन्हें परिवार को सम्भालकर बहुत कठिनाइयों में अपनी शिक्षा पूरी करनी पड़ी। माता आर्यसमाजी होने से उनपर आर्यसमाजी संस्कार दिखायी देते हैं, यह उनके "धर्मवीर" नाम से ही ज्ञात हो जाता है। उनका पहला विवाह असफल होने से उन्हें दूसरा विवाह करना पड़ा। जिसकी वजह से उनके जीवन में संघर्ष निर्माण हो गया। उन्होंने जीवन को जिस रूप में जाना, पहचाना है, उसे उन्होंने अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। अतः उनके व्यक्तित्व में संघर्षशीलता, अध्ययनशीलता एवं चिंतनशीलता दिखायी देती है। भारती जी की जन्मभूमि और कर्मभूमि इलाहाबाद होने के कारण इलाहाबाद से होनेवाला प्रेम उनके उपन्यास साहित्य में व्यक्त हुआ है। उन्होंने यहाँ जो देखा, भोगा उसीको अपने साहित्य में व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। अपने निजी प्रेम को उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त किया है। जिन घटनाओं ने उनके व्यक्तित्व एवं जीवनपर गहरा प्रभाव ड़ाला है, उन्हीं अनुभवों पर आधारित कथानकों का निर्माण करने का प्रयास भारती ने किया है। व्यक्तित्व के साथ-साथ उनका कृतित्व भी अद्वितीय बन गया है। वे एक सफल कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, निबंधकार, पत्रकार एवं आलोचक रहे हैं।

उपन्यास कला के क्षेत्र में भी डा.भारती सफल रहें हैं। उनके दोनों उपन्यास हिंदी उपन्यास-साहित्य में अपना स्वतंत्र स्थान रखते हैं। लोकप्रियता की दृष्टि से "गुनाहों का देवता" का महत्त्व अक्षुण्ण है, तो प्रयोग की दृष्टि से "सूरज का सातवाँ घोडा" का महत्त्व है। मध्यवर्ग से भारती का निकट संबंध रहा है अतएव उन्होंने अपने उपन्यासों में केवल मध्यवर्गीय समाज के ही पात्रों को स्थान दिया हैं।

प्रत्येक युग का साहित्य उस युग की परिस्थितियों से प्रभावित रहता है। साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध चिरंतन है। धर्मवीर भारती के साहित्य का भी युगचेतनाओं से गहरा संबंध है। यह उपन्यास सामाजिक है। इनके दोनों उपन्यासों में द्वन्द्वोन्मुखी

चरित्रों का वर्णन है, साथही मध्यवर्गीय समाज की विषमता, रूढ़िग्रस्तता तथा विकृति का भी चित्रण है। वस्तुतः परिस्थितियों में जिस गति से परिवर्तन आता है, उतना संस्कारों में नहीं। यह कारण है कि कुछ संस्थाओं और कुछ नियमों की व्यवहारिकता उतनी नहीं रहती तो भी संस्कारवश लोग उन्हें ज्यों का त्यों बनाये रखना चाहते हैं। भारती जी ने अपने उपन्यासोंमें शादी-ब्याह के अंतर्गत जाति-पाति की समस्या तथा दहेज समस्या और रीति-रिवाजों के माध्यम से उस काल की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति दर्शायी है। रूढ़ी-परम्परा और अंधश्रद्धा के अंतर्गत उस काल की धार्मिक परिस्थिति का परिचय मिलता है।

भारती जी अपने उपन्यासों के कथ्य में सफल हुए हैं। इनका "गुनाहों का देवता" यथार्थवादी सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास का कथानक तीन खण्डों में विभक्त है। उपन्यास का अंत उपसंहार में स्पष्ट हो जाता है। कथानक में मुख्य कथा का संबंध सुधा तथा चन्दर के चरित्र से विशेष रहा है। इस कथानक में मुख्य कथा के साथ-साथ कुछ प्रासंगिक कथाएँ भी समायोजित की गयी हैं। इसमें चन्दर तथा सुधा मुख्य पात्र है। इनकी कथा मुख्य कथा है। इस कथा को प्रत्यक्ष योग देनेवाले पात्रों में कैलाश, डा.शुक्ला, बिनती हैं। गेसू, रविंद्र बिसरिया, बुआ, पम्मी इन पात्रों का प्रत्यक्ष योग न होते हुए भी इनसे नायक और नायिका के चरित्रोद्घाटन में विशेष सहायता मिली है। इस उपन्यास के सभी पात्र उपन्यास में गतिशीलता, रोचकता लाते हैं। भारती जी ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण से लेकर शहरी आँचलिकता और परिवेश को स्पष्ट किया है। इसलिए देश-काल तथा वातावरण की दृष्टि से भी यह उपन्यास सफल रहा है। भाषाशैली की दृष्टि से इस उपन्यास में कई प्रकार के शब्द और भाषा के रूपों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। इन्ही माध्यमों से भारती अपने उद्देश्य में भी सफल हुए हैं। इस उपन्यास का मूल उद्देश्य है, स्त्री-पुरूष के अंतर्बाहय संबंधों को परखना। उपन्यास में लेखक के अपने अनुभव होने के कारण उपन्यास प्रभावशाली बन गया है। भारती ने "गुनाहों का देवता" उपन्यास में विभिन्न युगलों की स्थापना कर स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के विविध कोनों को उजागर करने की कोशिश की है। उपन्यास में प्रेम के विविध पहलुओं का चित्रण कर आदर्श एवं त्यागपूर्ण प्रेम के महत्त्व को प्रस्थापित किया है।

भारती जी ने "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास में मध्यवर्गीय पात्रों के प्रेम के विभिन्न दृष्टिकोण, परिस्थितियों और पहलुओं को सामने रखा है। यह उपन्यास छः कहानियों की एक कहानी के रूप में प्रस्तुत हुआ है। इनके माध्यम से भारती ने सूरज के सात घोडों का तात्पर्य स्पष्ट किया है। ये सारी कहानियाँ प्रेम कहानियाँ है और इनके माध्यम से समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के सभी पात्र निम्नमध्यवर्गीय है। भारती ने इन सभी पात्रों के माध्यम से विवाह के खोखलेपन, युवक-युवतियों की कुंठा, झुठी नैतिकता आदि पर व्यंग्य किया है। अर्थ और काम के इर्द-गिर्द घूमनेवाले निम्नमध्यवर्गीय जीवन का विड़म्बनात्मक चित्रण करना भारती जी का उद्देश्य रहा है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक आश्वासित करते हैं कि आनेवाले युग में मनुष्य जाति को अपनी मजबुरियों से छुटकारा पाने का स्वर्ण अवसर मिलनेवाला है। किंतु उसके लिए यह भी जरूरी है कि हम मिलकर उस सपने को साकार करने के लिए प्रयत्नशील रहे। इसतरह कथ्य की दृष्टि से यह उपन्यास सफल रहा है।

भारती ने कथ्य और शिल्प का प्रयोग अपने दोनों उपन्यासों में सफलतापूर्वक किया है। दोनों उपन्यासों की मूल संवेदना "प्रेम" है। नर-नारी के प्रेम-संबंधों को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करना उपन्यासों का मूल कथ्य है।

भारती जी ने निम्नमध्यवर्गीय और मध्यवर्गीय समाज के प्रेम के माध्यम से समाज की नारी समस्याओं का चित्रण किया है। इन समस्याओं में प्रेम समस्या, वैवाहिक समस्या, आर्थिक समस्या, शिक्षा समस्या आदि समस्याओं का चित्रण किया है। प्रेम समस्या नारी जीवन की महत्त्वपूर्ण समस्या है और आदर्श प्रेम में भारती ने त्याग को महत्त्व दिया है। वासनात्मक प्रेम की परिणति अच्छी नहीं होती है। यह बात भारती के उपन्यासों में दृष्टव्य है। प्रेम के साथ अनैतिक यौन संबंध भी नारी जीवन के लिए स्वाभाविक बनते जा रहे हैं। दमित भावनाओ की पूर्ति करने के लिए नारी अनैतिक यौन संबंध प्रस्थापित करती है। शायद इसलिए ही भारती के नारी पात्र वासनातृप्ति की खोज में लगे हुए दिखायी देते हैं। नारी जीवन में विवाह को अनन्य साधारण महत्त्व है, परंतु इसे भी विकृत बनाया

गया है। दहेज के कारण गरीब पिता बेटियों के अनमेल विवाह करने में मजबुर होते हैं और अनमेल विवाह की परिणति प्रायः दुःखद ही होती है। कभी कभी विवाह विच्छेद जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। यह विवाह विच्छेद केवल दहेज के कारण ही होता है ऐसा नहीं, पति-पत्नी में सांमजस्य की भावना न होने के कारण भी होता है। फिर भी भारती ने विवाह को एक व्यवहारिक आवश्यकता के रूप में स्वीकारा है। यौन भावनाओं की वैधानिक तृप्ति के लिए विवाह जैसी संस्थाओं की आवश्यकता है, परंतु जब नारी विधवा बनती है तब वह असहाय तो होती ही है, साथ ही उसके सामने यौन भावनाओं की तृप्ति की गंभीर समस्या उपस्थित होती है। इस अवस्था में नारी को अवैध यौन संबंध की स्थापना करनी पड़ती है और सामाजिक टीका का विषय बनना पड़ता है।

उपर्युक्त समस्याओं के साथ नारी जीवन में अन्य कई छोटी-मोटी समस्याएँ दिखायी देती हैं। जाति-बिरादरी के बंधन भी कभी कभी नारी के लिए समस्या बन जाते हैं। पुरूष की भाँति स्त्री को स्वाभाविक रूप में शिक्षा भी नहीं मिलती है। नारी शिक्षा के संदर्भ में सभी परिवार में समान स्थिति नहीं है। घरवालों की आर्थिक स्थिति का भी परिणाम नारी शिक्षा पर होता है तथापि भारती के उपन्यासों के समसामायिक काल में कुछ स्त्रियाँ महाविद्यालयीन शिक्षा तक पहुँची हुओ दिखायी देती हैं, जिसका प्रतिबिंब भारती के उपन्यासों में देखने मिलता है। अंधश्रद्धाएँ भी नारी जीवन पर परिणाम करती हैं। धार्मिक आड़ंबर नारी जीवन पर अपना असर ड़ालने में पिछे नहीं है। इसतरह समाज जीवन के अन्यान्य बातों का संबंध नारी जीवन से होता है और उनका अच्छा-बुरा परिणाम नारी जीवन पर लक्षित होता है। जब किसी बात का अच्छा परिणाम होता है तब नारी जीवन सुखद होता है और जब बुरा परिणाम होता है तब नारी जीवन में विकृति पैदा होती है और वह समस्या रूप में उभरती है।

इन उपन्यासों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल से ही नारी पर धर्म, रूढ़ी, परम्परा आदि बातों का प्रभाव पड़ा है। जाति व्यवस्था, धर्मसंस्कार, पुरूष का अहं, पुरूष की एकाधिकार की वृत्ति आदि के कारण नारी-जीवन हमेशा दुःखों,

पीड़ाओं, व्यथाओं, बंधनों एवं घुटन से भरा हुआ है। इसी कारण पूरा नारी जीवन समस्या प्रधान बन चुका है। यह सत्य है कि अभी भी स्त्री की स्थिति में विशेष अंतर नहीं आया है परंतु अब वह स्थिति भी नहीं रही कि स्त्री मूक भाव से समाज के अत्याचार सहे। उसका हृदय अब विद्रोह जानता है। इस तरह भारती ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन को उजागर करने का प्रयास किया है।

भारती जी ने अपने उप न्यासों के नारी पात्रों के माध्यम से अपनी नारी जीवन विषयक धारणा की अवधारणा की है। नारी जीवन के कई चित्र प्रस्तुत किए हैं। भारती जी के "गुनाहों का देवता" के सभी नारी पात्र प्रायः मन की पीड़ा के बोझ से दबे-दबे से लगते हैं इसमें सुधा, बिनती, पम्मी अपना कोई विशेष व्यक्तित्व नहीं रखती हैं। सुधा एक भावुक पात्र है, जो अपने प्रेमी के प्रति भावनिक तौर पर पूर्ण समर्पित है और उसे उसकी प्राप्ति न होने पर वह मौत को गले लगाती है। पम्मी स्पष्टवक्ती के रूप में प्रस्तुत हुअी है, पहले वह शादी से नफरत करती है किन्तु बाद में हिंदु विवाह पद्धति को स्वीकृत कर अपने पति के पास चली जाती है। बिनती अपेक्षाकृत एक व्यवहारिक लड़की है और उसका हृदय मानसिक कुण्ठाओं से नितांत मुक्त है। गेसू एक आदर्श प्रेमिका के रूप में प्रस्तुत हुई है, जिसने त्यागपूर्ण प्रेम को महत्त्व दिया है। बुआ रूढ़ी-परम्पराओं से कायल है। इसके माध्यम से ग्राम्य एवं अशिक्षित नारी का रूप प्रस्तुत हुआ है।

"गुनाहों का देवता" का कोई भी नारी पात्र सुखी नहीं दिखायी देता है। लेखक ने हर पात्र के जीवन में किसी न किसी प्रकार की समस्या भर दी है, जिसके माध्यम से समसामायिक नारी जीवन बोध स्पष्ट होता है। "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास में भी अंकित नारी पात्र दर-दर भटकते हुए दिखायी देते हैं। अर्थाभाव, विश्वासघात, अत्याचार, अनाचार, वैधव्य, अतृप्ति के कारण सारे नारी पात्र अस्वस्थ हैं। विभिन्न परिस्थितियों का सामना करते करते जमुना को अंततः चारित्रिक पतन का शिकार होना पड़ता है। अर्थ संपन्न लीलीकोप्रेमी माणिकद्वारा अस्वीकार होने पर उसे अनचाहे पति तन्ना का साथ देना कठिण हो जाता है। अतः उसका जीवन भी दुःखमय हो जाता है। सत्ती को ड़रपोक प्रेमी के

कारण स्वाभिमान का बली देना पड़ता है और अतः पशु-सा जीवनयापन करना पड़ता है।

इसतरह दोनों उपन्यासों के नारी पात्रों का जीवन मानसिक संघर्षों से युक्त अस्वस्थ, अभिशप्त, अतृप्त दिखायी देता है।

भारती के उपन्यासों में स्त्री पात्र अधिक हैं। इसमें हिंदु धर्म के अधिकांश पात्र हैं। कुछ मध्यवर्गीय तो कुछ निम्नवर्गीय है। हर पात्र की अपनी एक खास विशेषता है। सुधा भावुक है, बिनती व्यवहारिक है, लीली अहंभावी है, सत्ती विद्रोही है तो जमुना कुण्ठित और चरित्रहीन नारी है। इसप्रकार के विभिन्न पात्रों की योजना कर लेखक ने नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने की कोशिश की है। इन पहलुओं से यह स्पष्ट होता है कि सन १९०० से लेकर १९६० तक का नारी जीवन पूर्णतः संतोषजनक नहीं है। यदयपि उन्नीसवी शती की तुलना से बीसवी शती का नारी जीवन प्रगतिशील है। शिक्षा, परिवार, सामाजिक जीवन में नारी को कुछ हद तक सम्मान प्राप्त हो रहा है। तथापि पुरूष जैसी योग्यता उसे प्राप्त नहीं है। वास्तविक जीवन में नगर का नारीजीवन काफी मात्रा में सुधरा हुआ प्रतित होता है, परंतु नारी जीवन के अन्यान्य प्रगत जीवन के अंशों का उल्लेख भारती के उपन्यासों में उल्लेखित नहीं है। इन उपन्यासों में नारी का सर्वसाधारण जीवन चित्रित हो पाया है। ग्रामीण तथा पहाड़ी नारी जीवन के कई ऐसे अंग है, जो भारती के उपन्यासों में उल्लेखित नहीं है फिर भी दो उपन्यासों के मर्यादित लघुपट द्वारा नारी-जीवन की विविध झाँकियों को प्रस्तुत करने में भारती जी सफल हुए हैं।

धर्मवीर भारती ने केवल दो ही उपन्यास लिखे हैं फिर भी उन्होंने उपन्यासविधा को अपनी हैसियत के मुताबिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। भारती मूलतः कवि हैं। कविता के क्षेत्र में दिखायी देनेवाली उनकी रोमँटिक प्रवृत्ति, बहुमुखी प्रतिभा उपन्यासों में भी सजग रूप में दिखायी देती है। अतः उनकी औपन्यासिक कृतियाँ भी काव्यात्मक मधुरता से परिपूर्ण हैं। उनके उपन्यास यथार्थ की धरातल पर खड़े हैं। भाषा की सामासिकता, व्यंग्यात्मक शैली में उन्होंने मनोवैज्ञानिक विषय को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। विषय प्रतिपादन में उनका मानवतावादी दृष्टिकोण झलकता है। मनोविज्ञान को उपन्यास क्षेत्र में प्रमुखता देनेवाले

उपन्यासकारों में भारती एक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार हैं। प्रयोगशील उपन्यासकार के रूप में भी भारती अग्रिम पंक्ति में हैं। उनके प्रयोग सोद्देश्य हैं। "सूरज का सातवाँ घोड़ा" इसका उत्तम उदाहरण है। छोटे-से फलक पर जीवन के अनेक दृश्य प्रदर्शित करने का उनका नया प्रयास इस कहानीनुमा उपन्यास में सफल-सिद्ध हुआ है। व्यक्तिवाद का पोषण करनेवाली भारती की दोनों औपन्यासिक कृतियाँ सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। अतएव उपन्यास विधा के लिए भारती का यह योगदान दुर्लक्षित नहीं किया जा सकता है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ एवं नयी दिशाएँ।

(क) अनुसंधान की उपलब्धियाँ :-

हर अनुसंधान की कोई न कोई उपलब्धि होती ही है। अन्यतः उस शोध कार्य का कोई मूल्य ही नहीं है। मैं भारती जी के उपन्यासों के सुक्ष्म अध्ययन के बलपर निम्नलिखित मौलिक उपलब्धियाँ तक पहुँचा पायी हूँ।

१. संघर्षमय जीवन से भी राह निकालने की भारती जी की प्रवृत्ति को देखकर पाठक में भी संघर्षमय जीवन का सामना करने की प्रेरणा निर्माण होती है।
२. भारती जी के मौलिक उपन्यासों में भारती जी का ही जीवन का अंकन हो चुका है अतएव सत्य पर आधारित कथानक को पढ़ने में पाठक रूचि रखता है।
३. भारती जी के दोनों उपन्यासों में चित्रित प्रेम समस्याओं से अभिभूत होकर संवेदनशील पाठक प्रेम के संदर्भ में सावधान रहता है।
४. भारतीद्वारा चित्रित नारी जीवन की दयनीयता को देखकर पाठक के मन में सहानुभूति पैदा होती है।
५. लेखक ने दुःखमय जीवन से ऊपर उठकर, सुखमय जीवन के लिए प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा इन उपन्यासोंद्वारा प्रदान की है।

(ख) नयी दिशाएँ :-

धर्मवीर भारती का साहित्य मौलिक साहित्य है। साहित्य की हर विधा पर उन्होंने लेखनी चलायी है और उनकी हर विधा पर शोधकार्य किया जा रहा है। मैंने उनकी उपन्यास विधा का एक अंग चुना है, तथा अन्य शोध छात्रों के लिए भी कुछ नयी दिशाएँ बच पाती है।

जैसे -

१. धर्मवीर भारती के "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास का तात्त्विक विवेचन।

२. धर्मवीर भारती के उपन्यासों में अंकित प्रेम चित्रण।

३. धर्मवीर भारती के उपन्यासों चित्रित मध्यवर्गीय जीवन।

-o-o-o-o-

* संदर्भ ग्रंथ सूची *